B.A Part-2 Psychology Subsidiary Paper-Abnormal Psy. Topic- Difference between Normal and Abnormal behaviour. Study material by Dr. Prabha Shree (Guest Faculty, Deptt of Psychology Vaishali Mahila College, Hajipur)

सामान्य एवं असामान्य व्यवहार में अंतर

(Difference between Normal and Abnormal behaviour)

सामान्यतः हम जानते हैं कि वह व्यक्ति जो पूर्ण रूप से सामान्य है जो कि भयावह, अघातों एवं नैराश्य उत्पन्न करने वाली परिस्थितियों पर विजय प्राप्त कर लेता हो, सामान्य व्यवहार के

अंतर्गत आता है जबकि असामान्य व्यवहार वह है जो कष्टप्रद अप्रक्रियात्मक एवं दुखद होता है। किंतु सामान्य एवं असामान्य व्यवहार में मूल अंतर को समझना भी अति आवश्यक है कुछ महत्वपूर्ण बिंदु है जिनसे सामान्य एवं असामान्य व्यवहार में अंतर को समझा जा सकता है जो निम्नांकित है-

- **असामान्य व्यक्तियों में पूर्व-अनुभवों से लाभ उठाने की योग्यता का अभाव जबकि सामान्य व्यक्तियों में पूर्व-अनुभवों से लाभ उठाने की योग्यता-** असामान्य व्यवहार वाले व्यक्तियों में

पूर्व-अनुभवों के द्वारा लाभ उठाने की योग्यता की कमी होती है क्योंकि ऐसे व्यक्तियों में सूझबूझ का अभाव रहता है अतः ऐसे व्यक्ति पूर्व में की गयी त्रुटियों को भविष्य में दोहराते रहते हैं। इनके विपरीत सामान्य व्यवहार वाले व्यक्तियों में पूर्व-अनुभवों से लाभ प्राप्त करने का गुण पाया जाता है। सामान्य व्यक्ति अपनी योजनाओं की तैयारी पूर्व-अनुभवों के आधार पर करता है और उनमें से पूर्व में हुई गलतियों को वह नहीं दोहराता है या

दोहराने से बचता है या उन गलतियों को निकाल देता है।

- **अनोखा व्यवहार-** असामान्य व्यक्तियों का जो व्यवहार होता है वह अनियमित होता है ऐसे व्यक्ति कभी भी कहीं भी अकारण ही रोना, हंसना, कूदना आदि शुरू कर देते हैं जबकि सामान्य व्यवहार वाले व्यक्तियों में यह सभी क्रियाएं किसी भी परिस्थिति तथा वहां के वातावरण के आधार पर होती हैं।

- **असामान्य व्यक्तियों में सूझ की कमी तथा सामान्य व्यक्तियों में समयानुसार सही निर्णय लेने की सक्षमता-** असामान्य व्यक्तियों में सूझ-बूझ करने की क्षमता नहीं होती है। सूझ-बूझ की कमी होने के कारण ऐसे व्यक्ति निर्णय लेने में असमर्थ होते हैं। इसके विपरीत सामान्य व्यक्तियों में सूझबूझ होने के कारण वह सही समय पर सही निर्णय लेने में सक्षम होते हैं।
- **असामान्य व्यक्तियों के व्यवहार परिस्थितियों के अनुरूप नहीं होते**

जबकि सामान्य व्यक्तियों के व्यवहार परिस्थितियों के अनुरूप होते हैं- असामान्य व्यक्तियों का व्यवहार हमेशा परिस्थितियों के विपरीत होता है क्योंकि उनमें सोचने समझने की शक्ति नहीं होती है या बहुत ही कम होती है जबकि सामान्य व्यवहार वाले व्यक्तियों का व्यवहार परिस्थितियों के अनुकूल होता है।

- **असामान्य व्यक्ति त्रुटिपूर्ण व्यवहार के लिए पश्चाताप नहीं करते जबकि सामान्य व्यक्ति पश्चाताप का अनुभव करते हैं-** असामान्य व्यवहार

वाले व्यक्तियों को अपनी त्रुटियों का पता नहीं होता है और पता होने पर भी उन्हें किसी भी प्रकार से उस गलती या त्रुटि के लिए पश्चाताप का अनुभव नहीं होता है। इसका मुख्य कारण है - मानसिक विघटन। ऐसे व्यक्तियों को सही या गलत का कोई अनुभव नहीं होता है जबकि सामान्य व्यवहार वाले व्यक्तियों को सही और गलत का अनुभव होता है जिसके परिणामस्वरूप उन्हें अपने त्रुटियों का अनुभव भी होता है।

- **असामान्य व्यक्तियों का व्यवहार स्वयं अपने तथा दूसरों के लिए अहितकर जबकि सामान्य व्यक्ति का व्यवहार हितकर तथा उपयोगी-** असामान्य व्यक्तियों का व्यवहार न तो अपने लिए और न ही समाज के लिए हितकर होता है। इसके विपरीत सामान्य व्यक्तियों का व्यवहार अपने लिए तथा समाज एवं परिवार के लिए कल्याणकारी होता है।
- **असामान्य व्यक्तियों में परस्पर मेलजोल का अभाव जबकि सामान्य व्यक्तियों में अच्छा आपसी मेलजोल-**

असामान्य व्यक्ति अपने आसपास के वातावरण तथा लोगों के साथ घुल-मिल नहीं पाते हैं। ऐसे व्यक्ति संवेगात्मक रूप से अस्थिर होते हैं, मानसिक रूप से कमजोर भी हो सकते हैं जबकि सामान्य व्यक्ति अपने आसपास के वातावरण तथा उसमें रहने वाले लोगों के साथ सरलता से घुल-मिल जाते हैं। सामान्य व्यक्तियों में संवेगात्मक स्थिरता होती है।

- **असामान्य व्यक्तियों में उपयुक्त आत्म-मूल्यांकन का अभाव जबकि**

सामान्य व्यक्तियों में उपयुक्त आत्म-मूल्यांकन- असामान्य व्यक्ति मानसिक विघटन तथा सूझ-बूझ की कमी होने के कारण अपने शारीरिक एवं मानसिक क्षमता तथा अपनी योग्यता का मापन सही ढंग से नहीं कर पाते हैं जबकि सामान्य व्यक्ति अपनी योग्यताओं तथा शारीरिक एवं मानसिक क्षमताओं का उचित मापन कर उसी के अनुरूप अपनी इच्छाएं एवं आकांक्षाएं रखते हैं।